शोध-प्रारूप

नागपुरी भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस में प्रभाव: एक अध्ययन

राँची विश्वविद्यालय, राँची से पीएच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध-प्रारूप

राँची विश्वविद्यालय नागपुरी विभाग

संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ. खातिर हेमरोम
सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग
मारवाड़ी कॉलेज, रांची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्त्ता

संजय कुमार
यू.जी.सी. नेट /जे.आर.एफ.
नागपुरी विभाग
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी वि.वि., राँची

नागपुरी भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस में प्रभाव :एक अध्ययन

भूमिका :- नागपुरी साहित्य का झारखण्ड में वही प्रभाव है, जो प्रभाव हिंदी साहित्य का पूरे भारतवर्ष में है| झारखण्ड भू-भाग में अनेक भाषाएँ बोली जाती है, परन्तु नागपुरी झारखण्ड राज्य में सम्पर्क भाषा के रूप में एक विशेष स्थान रखता है| यहाँ के आदिवासी हो या गैर-आदिवासी (सदान) सभी जनसमुदाय अपनी बोलचाल में नागपुरी का प्रयोग करते हैं| नागपुरी भाषा अपनी मधुरता, सादगी एवं कोमलता से झारखण्ड के जनमानस को प्रभावित करता आया है|

झारखण्ड राज्य क्षेत्र में नागपुरी भाषा की उत्पत्ति नागवंशी शासन काल से भी पूर्व की मानी जाती है | यह माना जा सकता है कि 64 ई. में जब फणिमुकुट राय नागवंशी शासन की स्थापना किये, तब से लेकर 1947 ई. तक नागपुरी को नागवंशी राज्य की राजकीय भाषा का दर्जा प्राप्त था | इस भाषा का संरक्षण नागवंशी शासको के द्वारा किया गया | इस आधार पर कहा जा सकता है कि नागपुरी भाषा का इतिहास छोटानागपुर क्षेत्र में 2000 वर्ष से भी ज्यादा है |

"नागपुरी भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस में प्रभाव : एक अध्ययन" पर प्रकाश डाले तो नागपुरी लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य दोनों का अपना अलग स्थान है| हमलोगों ने अपने बचपन में जितने भी लोक कथाएँ, लोक गीत आदि अपने दादी, नानी से सुने है, उनका हमारे जीवन में व्यापक प्रभाव पड़ा है| इन सभी लोक कथाओं एवं लोकगीतों के माध्यम से लोग तत्कालीन परिस्थितियों एवं तथ्यों को मौखिक शब्दों में बांधने का प्रयास किये हैं|

नागपुरी शिष्ट साहित्य का इतिहास 1626 ई. से मानी जाती है और इसके पहले ज्ञात कवि नागवंशी महाराज **रघुनाथ नृपति** थे| ये छोटानागपुर के 50वें नागवंशी राजा थे| इनके द्वारा रचना किये गये उत्कृष्ट रचनाएँ आज भी झारखण्ड के नागपुरी भाषी जनसमुदाय को प्रभावित करती है | इनके लोकप्रिय गीत है -

पोड़िलो बरखा रीतु

पोड़िलो बरखा रीतु, बिरहे बेदन चितु
ताई जागे दुगुन मदन,
दुख दारुन हे, झूले सदाइ कमल नयन |

डाहुक दादुली सोर, हिया भेल जोरजोर,
पिया बिनु बाँचे ना जीवन,
दुख दारुन हे, झूले सदाइ कमल नयन |

गरजे गगने घटा, बिजुली चमके छटा,
गृह भेल सरस कानन,
दुख दारुन हे, झूले सदाइ कमल नयन |

कहे नृप रघुनाथ, सुन दुति एक बात,
लहरी उठत खने खन,
दुख दारुन हे, झूले सदाइ कमल नयन |

यह गीत कृष्ण भक्ति से ओत-प्रोत होकर झारखण्ड के जनमानस को प्रभावित करता आया है | इसी प्रकार अनेक नागपुरी साहित्य है, जो झारखण्ड के जनमानस को प्रभावित किया है |

भारत की प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 ई. गुलामी के विरोध में झारखण्ड राज्य से भी अंग्रेजो के विरुद्ध जनक्रांति की आग फूटी | जिसमें ठाकुर विश्वनाथ शाही, टिकैत उमराँव सिंह, शेख भिखारी, नादिर अली आदि अनेक वीरों ने बलिदान दिये| इस पूरे छोटानागपुर के जनक्रांति में नागपुरी साहित्य लोगों को अपनी माटी को बचाने के लिए प्रेरित किया| इसके साथ-ही-साथ झारखण्ड आन्दोलन में नागपुरी साहित्य के योगदानों को नाकारा नहीं जा सकता है | इस दौरान अनेकों साहित्यकारों के द्वारा गीत, कविता और कहानी आदि की रचना किया गया, जिसके फलस्वरूप लोगों में आग में घी डालने का काम किया और झारखण्ड आन्दोलन को सक्रिय बनाया | इसी प्रकार एक क्रान्तिकारी गीत को देख सकते है, जिसे पद्म **श्री मधु मंसूरी हँसमुख** के द्वारा रचना किया गया है |

गाँव छोड़ब नही, जंगल छोड़ब नही

माँय माटी छोड़ब नही, लड़ाई छोड़ब नही

इसी प्रकार एक और रचना देख सकते हैं जिसे लेखक **सी. डी. सिंह** के द्वारा लिखा गया है-

जागा - जागा

जागा रे झारखण्ड कर बीर धीर जागा,
जागेक बेरा जागा- जागा करा मइत देर,
लाल जागा ठाकुर जागा,जागा सुतल शेर,
उराँव- मुंडा संगे संग, शेख पूत जागा ,
जागा रे झारखण्ड कर बीर-धीर जागा |

इन सभी रचनाओं ने झारखण्ड के जनमानस को सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से प्रभावित किया है |

प्रेरणाः- नागपुरी भाषा झारखण्ड भू-भाग में निवास करने वाले जन समुदायों का मातृभाषा रही है | यहाँ की आदिवासियों की अपनी मातृभाषा होने के बावजुद इनके द्वारा नागपुरी को जन सम्पर्क भाषा के रूप में अपनाया गया| **"नागपुरी भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस में प्रभाव: एक अध्ययन"** इनके सामाजिक व्यवहारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं राजनीतिक गतिविधियों में देखे जा सकते हैं | विशेष कर जब लोग संध्या के समय अखरा में उतरते हैं, तो नागपुरी गीतों की राग और मांदर की थाप से सम्पूर्ण वातावरण रोमांचित हो उठता है| झारखण्ड की संस्कृति में अखरा की परम्परा पीढ़ियों से चली आ रही है | अखरा का हर एक व्यक्ति कलाकार और दर्शक दोनों होते हैं | लोग गीत-संगीत से अपने दिन भर के थकान को दूर करते हैं|

वर्त्तमान परिपेक्ष्य में देखें तो नागपुरी साहित्य का महत्व एवं प्रभाव पूरे झारखण्ड राज्य में बढ़ गया है | झारखण्ड राज्य गठन के बाद नागपुरी भाषा को द्वितीय राजभाषा के रूप में मान्यता मिला हुआ है | नागपुरी साहित्य का प्रभाव शैक्षणिक रूप में झारखण्ड के विश्विद्यालयों में बढ़ा है | आज इस भाषा को लोग रोजगार के रूप में भी देख रहे हैं, जिसके फलस्वरूप नागपुरी भाषा के पठन-पठान में उछाल हुआ है |

उपर्युक्त नागपुरी भाषा साहित्य झारखण्ड राज्य के लोगों को इसी प्रकार प्रभावित करता आया है और प्रभावित करता रहेगा | इस भाषा साहित्य के द्वारा झारखण्ड के लोगों में होने वाले बदलाव को जानने के लिए मुझे प्रेरित किया है | यही कारण है कि मैं इस शोध विषय **"नागपुरी भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस में प्रभाव: एक अध्ययन"** को पूरा करने की इच्छा रखता हूँ।

शोध का उद्धेश्य:-

1. नागपुरी भाषा साहित्य का झारखण्ड राज्य के जनमानस में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक प्रभाव को बतलाना।
2. झारखण्ड राज्य में नागपुरी भाषी जन समुदाय को चिन्हित करना ।
3. झारखण्ड के लोगों को प्रभावित करने वाले नागपुरी साहित्य एवं साहित्यकारों को बतलाना।
4. झारखण्ड की जनजातीय भाषाओं एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में नागपुरी के प्रभाव को बतलाना।
5. झारखण्ड से बाहर निवास करने वाले झारखण्ड के लोगों में नागपुरी भाषा का प्रभाव को बतलाना।
6. नागपुरी साहित्य का वर्त्तमान समय में प्रभाव को बतलाना।

शोध विधि:-

शोध कार्य निम्नलिखित विधियों द्वारा किये जा सकते हैं -

1. अवलोकन विधि -
2. साक्षात्कार विधि -
3. प्रश्नावली विधि -
4. विश्लेषणात्मक विधि -
5. आलोचनात्मक विधि -
6. तुलनात्मक विधि -

उपकरण :-

निम्नलिखित उपकरण शोध कार्य के दौरान उपयोग में लिये जा सकते हैं -

1. शोध विषय से सम्बंधित शोध प्रबंध, पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएं, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।
2. पत्र-पत्रिकाएं- जैसे- गोतिया, जोहार, जय झारखण्ड, संगम, आज, नागपुरी समाचार इत्यादि।
3. टेप रिकॉर्डर - (साक्षात्कार के लिए उपयोगी।)
4. मोबाईल-
5. कैमरा- (शोध सम्बंधित चित्रों एवं वीडियो को संग्रह करने के लिए आवश्यक।)
6. कंप्यूटर, इंटरनेट - (शोध सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु)
7. मानचित्र
8. कागज, कलम इत्यादि|

पूर्व अध्ययन और अनुसंधान :-

नागपुरी भाषा साहित्य के विभिन्न शोधार्थियों द्वारा नागपुरी साहित्य के अनेक पक्षों का अनुसंधान किये गये हैं | जिसमे विशेष रूप से नागपुरी साहित्य के विकास, उत्पति, गद्य, पद्य, नागपुरी गीतों की छंद, महाकाव्य, खण्डकाव्य, कहानी, उपन्यास, एवं नागपुरी भाषा साहित्य की तुलनात्मक अध्ययन आदि पर शोध कार्य हुआ है |

नागपुरी के अनेक साहित्यकारों जैसे: घासी राम, लाल रणविजय नाथ शाहदेव, कवि कंचन, प्रफुल्ल कुमार राय, डॉ. बी. पी. केशरी, शारदा प्रसाद शर्मा, नईमुद्दीन मिरदाहा, मधु मंसूरी हँसमुख आदि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर भी शोध कार्य किये जा चूँके हैं |

लेकिन वर्त्तमान में **"नागपुरी भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस में प्रभाव: एक अध्ययन"** विषय पर किसी भी प्रकार से अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है | प्रस्तावित शोध विषय अपनी मौलिक एवं नवीनतम धारणाओं के कारण विशिष्ट होगा |

शोध का समाज पर प्रभाव :-

“नागपुरी भाषा साहित्य का झारखण्ड के जनमानस में प्रभाव: एक अध्ययन” एक महत्वपूर्ण विषय है| इसमें शोध कार्य किये जाने से झारखण्ड के लोगों में नागपुरी भाषा के प्रभाव के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध होगा | यह शोध कार्य होने से समाज में नागपुरी साहित्य के मूल्यों में वृद्धि होगा एवं समाज में साकारात्मक प्रभाव पड़ेगा | लोगों को इस शोध से काफी महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलेगा तथा वे जान पाएंगे कि किस प्रकार नागपुरी भाषा झारखण्ड के लोगो के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन में प्रभाव डाला है | इस ‘शोध’ विषय से समाज के सभी वर्गो के लोग लाभान्वित होंगे|

शोध प्रारूप :-

प्रस्तावित अनुसंधान को निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार पूरा करने की योजना है :-

- **प्रस्तावना -**
- **शोध विषय की प्रेरणा -**
- **औचित्य -**
- **शोध कार्य की विषय सीमा -**
- **शोध विधि -**
- **विषय से संबंधित पूर्व में किये गये शोध कार्यो का विवरण -**

पहला अध्याय - नागपुरी भाषा साहित्य का परिचय -

(क) पद्य साहित्य

- गीत
- कविता
- खण्ड काव्य
- महाकाव्य

(ख) गद्य साहित्य

- कहानी
- नाटक
- उपन्यास

- निबंध

दूसरा अध्याय - झारखण्ड राज्य में नागपुरी भाषी जनमानस -

(क) आदिवासी जनमानस

(ख) गैर-आदिवासी (सदान) जनमानस

तीसरा अध्याय - नागपुरी भाषा का झारखण्ड के जनमानस में सामाजिक प्रभाव -

(क) जनसम्पर्क भाषा -

- खूंटी क्षेत्र
- गुमला क्षेत्र
- लोहरदगा क्षेत्र
- राँची क्षेत्र
- रामगढ़ क्षेत्र
- सिमडेगा क्षेत्र

(ख) आकाशवाणी कार्यक्रम -

(ग) दूरदर्शन कार्यक्रम -

(घ) विभिन्न क्षेत्रीय कार्यक्रमों का संचालन-

चौथा अध्याय - नागपुरी भाषा का झारखण्ड के जनमानस में सांस्कृतिक प्रभाव -

(क) विवाह संस्कार में नागपुरी भाषा का प्रभाव-

(ख) छठी संस्कार -

(ग) पर्व-त्योहारों में नागपुरी भाषा का प्रभाव -

(घ) ग्रामीण अखरा में नागपुरी भाषा का प्रभाव -

(ङ) खेत-खलियानों में नागपुरी भाषा का प्रभाव -

पांचवा अध्याय - नागपुरी भाषा का झारखण्ड के जनमानस में धार्मिक प्रभाव-

(क) नागपुरी भाषा में विभिन्न मंत्र -

(ख) नागपुरी भाषा में विभिन्न भक्ति रचनाएँ -

- गीत

- कविता

(ग) धार्मिक ग्रंथो का नागपुरी में अनुवाद -

छठा अध्याय - नागपुरी भाषा का झारखण्ड के जनमानस में राजनीतिक प्रभाव-

(क) राष्ट्रीय आंदोलन काल में -

(ख) झारखण्ड आंदोलन काल में

(ग) आन्दोलनकारियों द्वारा नागपुरी भाषा को प्राथमिकता देना -

(घ) साहित्य के सन्दर्भ में -

- गीत
- कविता
- लेख
- पत्र-पत्रिका

सातवाँ अध्याय - झारखण्ड के विभिन्न भाषा-भाषी में नागपुरी भाषा साहित्य का प्रभाव-

(क) कुडुख भाषी जनमानस में प्रभाव -

(ख) मुण्डारी भाषी जनमानस में प्रभाव -

(ग) हो भाषी जनमानस में प्रभाव -

(घ) संथाली भाषी जनमानस में प्रभाव -

(ङ) खड़िया भाषी जनमानस में प्रभाव -

(च) खोरठा भाषी जनमानस में प्रभाव -

(छ) कुरमाली भाषी जनमानस में प्रभाव -

(ज) पंचपरगनिया भाषी जनमानस में प्रभाव -

(झ) बंगला भाषी जनमानस में प्रभाव -

आठवाँ अध्याय - झारखण्ड से बाहर निवास करने वाले झारखण्ड के लोगों में नागपुरी भाषा का प्रभाव-

(क) असम -

(ख) उड़ीसा -

(ग) छत्तीसगढ़-

(घ) बिहार -

(ङ) पश्चिम बंगाल -

(च) अंडमान निकोबार -

(छ) उन सभी जगहों में जहाँ झारखण्ड के लोग पलायन किये हैं -

उपसंहार -

परिशिष्ट -

1. सहायक ग्रंथो की सूची-
2. पत्र-पत्रिका-
3. साक्षात्कार सूची-
4. चित्रावली -

नोट:- प्रस्तावित अनुसंधान की रूप रेखा में आवश्यकतानुसार आंशिक परिवर्तन भी किये जा सकते हैं।

शोध निर्देशक

डॉ॰ खातिर हेमरोम
सहायक प्राध्यापक
मुण्डारी विभाग
मारवाड़ी कॉलेज, रांची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधकर्ता

संजय कुमार
एम.ए., यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
नागपुरी विभाग
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी वि.वि., राँची

संदर्भ ग्रंथ की सूची

क्र.	लेखक	रचना	प्रकाशक	वर्ष
1.	'अनुज' डॉ॰ भुवनेश्वर	नागपुरी लोक साहित्य	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	1992
2.	'केशरी' डॉ॰ वी.पी.	नागपुरी कवि और उनके काव्य	नागपुरी सस्थान पिठोरिया, राँची।	2014
3.	'गौंझू' डॉ॰ गिरिधारी राम	झारखण्ड की पारंपरिक कलाएँ	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2017
4.	'केशरी' डॉ॰ वी॰पी॰	नागपुरी लोकगीत	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची।	2007
5.	'केशरी' डॉ॰ वी॰पी॰	झारखण्ड के सदान	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची।	2015
6.	'गौंझू' डॉ॰ गिरिधारी राम	नागपुरी के प्राचीन कवि	झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची।	2012
7.	'केशरी' डॉ॰ वी॰पी॰	छोटानागपुर का इतिहास: कुछ सूत्र कुछ संदर्भ	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2014
8.	'तिवारी' डॉ॰ उमेश नंद	आधुनिक नागपुरी साहित्य	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2014
9.	'शर्मा' डॉ.विमला चरण	झारखण्ड की जनजातियाँ	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची।	2014
10.	बासंती डॉ॰ कुमारी	नागपुरी गीतों की छंद - रचना	किशोर विद्या निकेतन, बी॰ 2/ 236-ए, भदैनी, वाराणसी	1993
11.	'प्रसाद' डॉ. राम	स्वतंत्रोतर नागपुरी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन	झारखण्ड झरोखा रातू रोड, राँची। इलाहाबाद 211002	2014

पत्र-पत्रिका

1. ‘गोतिया’ - ठुमसा टोली, चुटिया, राँची।
2. ‘सहिया’ - एम॰जी॰ टावर 23 पूर्वी जेल रोड, राँची।
3. ‘डहर’ - छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ।
4. राँची एक्सप्रेस - अपर बाजार, राँची।
5. आज - सामलौंग, राँची।
6. प्रभात खबर - कोकर, राँची।
7. हिन्दूस्तान - कोकर, राँची।
8. दैनिक जागरण - कोकर, राँची।
9. दैनिक भास्कर - रातू रोड, राँची।
10. सन्मार्ग - हरमू रोड, राँची।
11. आदिवासी - बिहार सरकार - राँची।
12. नागपुरी - वी/205 जगन्नाथपुर, राँची।
13. नागपुरी समाचार - थड़पखना, राँची।
14. मांय-माटी - प्रभात खबर